संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ७ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ मार्च २०२३
वर्ष : ३२ अंक : ९ (निरंतर अंक : ३६३)
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)

संत श्री आशारामजी बापू पर दर्ज केस की क्या है सच्चाई ?

- महत्त्वपूर्ण बिंदुओं को किया गया नजरअंदाज
- कल्पित कहानी, बयानों में कई विरोधाभास
- बयान बदलने की अर्जी से हुआ खुलासा
- सगी बहन ने क्या हकीकत बतायी ?
- ऐसे बुना गया षड्यंत्र का जाल
- एकतरफा जाँच

पढ़ें पृष्ठ ९

तथ्यों को पढ़िये और आप ही निर्णय करिये !

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू का अवतरण दिवस अर्थात् विश्व सेवा-सत्संग दिवस : ११ अप्रैल

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः ।... (गीता : ४.९)

पढ़ें पृष्ठ १३

भगवान कहते हैं : 'मेरे जन्म और कर्म दिव्य हैं ऐसा जो तत्त्व से जानता है उसके भी जन्म, कर्म दिव्य हो जाते हैं।' कर्म इन्द्रियों से होते हैं, मन से होते हैं, वासना से होते हैं, उनको देखनेवाला मैं चैतन्य हूँ - ऐसी भगवान की मति को अपनी मति बना लो तो तुम्हारे कर्म और जन्म दिव्य हो जायेंगे।

- पूज्य बापूजी

जिन्होंने जनमानस को अज्ञान-अंधकार से ज्ञान-प्रकाश की ओर लाने का भगीरथ प्रयास किया ऐसे सनातन धर्म के पोषक, प्रचारक, महान धर्मपुरुष आशारामजी बापू को षड्यंत्रवश कैद कर रखा है। सनातन संस्कृति और हिन्दुत्व के कल्याण के लिए उनको तत्काल नतमस्तक होकर रिहा करना कर्तव्य बनता है। - श्री अवधेशजी गुप्त, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, गौरक्षा विभाग, वि.हि.प.

पढ़ें पृष्ठ २७

करोड़ों सूर्यग्रहण से अधिक फलदायक है यह व्रत

श्रीरामनवमी : ३० मार्च

पढ़ें पृष्ठ १६

आप भी ऐसा जीवन-लक्ष्य बना लो ११

श्री हनुमान जयंती : ६ अप्रैल

आर्थिक स्थिरता व दाम्पत्य सुख का उपाय ३३

त्रिफला से पायें स्वास्थ्य-लाभ भरपूर ! ३१

पूज्य बापूजी के अमृतवचन : ''रुद्राक्ष माला की बड़ी भारी महिमा है। महर्षि वेदव्यासजी ने कहा है : 'रुद्राक्ष की माला धारण करनेवाला मनुष्य सब प्राणियों में श्रेष्ठ होता है। इसे धारण करके पुण्यकर्म करनेवाला अक्षय फल का भागी होता है।' रुद्राक्ष दीर्घायु-प्रदायक एवं स्वास्थ्य-हितकर गुणों से भरपूर है। मानसिक शक्तियों, एकाग्रता व रोगप्रतिकारक शक्ति की वृद्धि करने में भी रुद्राक्ष का बड़ा सहयोग मिलता है। रुद्राक्ष माला जिसने भी धारण की, भूत-प्रेत आदि तुच्छ शक्तियाँ उसके नजदीक फटकती भी नहीं हैं, परेशान तो क्या करेंगी ?

जो ऋषि प्रसाद की सेवा में लगे हैं उन पृथ्वी के देवों को प्रसादरूप में रुद्राक्ष मालाएँ मिलेंगी।''

उपरोक्त गुणों से सम्पन्न रुद्राक्ष माला या मनका यदि पूज्य बापूजी जैसे ब्रह्मनिष्ठ महापुरुष की दिव्य दृष्टि, पावन स्पर्श व मंगलमय संकल्पों से सम्पन्न होकर प्रसादरूप में मिले तो उसकी महिमा का क्या वर्णन किया जाय ! स्वास्थ्य, आनंद, शांति, सफलता व मनोकामनापूर्ति का लाभ देनेवाला यह प्रसाद आप भी पा सकते हैं।

कैसे पायें यह लाभ : (१) ऋषि प्रसाद/ऋषि दर्शन के सेवाधारियों के लिए : २५ सदस्य बनाने पर १ रुद्राक्ष माला (२७ मनकेवाली), ५० सदस्य पर ऐसी २ रुद्राक्ष मालाएँ व १०० सदस्य बनाने पर १ रुद्राक्ष माला (१०८ मनकेवाली) प्रसादस्वरूप भेंट में दी जायेंगी।

(२) ऋषि प्रसाद के सदस्यों के लिए : ❊ ऋषि प्रसाद की आजीवन (१२ वर्ष की) सदस्यता पर पूज्यश्री से स्पर्शित रुद्राक्ष मनका (रक्षासूत्र) व ऋषि दर्शन की १ वर्ष की सदस्यता भेंटस्वरूप दिये जायेंगे।

एक कल्याणकारी योजना के अंतर्गत आप भी बन सकते हैं पृथ्वी के देव और पा सकते हैं ये दुर्लभ रुद्राक्ष मालाएँ !

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क : ऋषि प्रसाद मुख्यालय, अहमदाबाद, दूरभाष : (०७९) ६१२१०७१४

ऋषि प्रसाद की सेवा में लगे पृथ्वी के देव प्रसादरूप में रुद्राक्ष मालाएँ पाते हुए

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु देखें : rishiprasad.org/rudraksha या स्कैन करें :

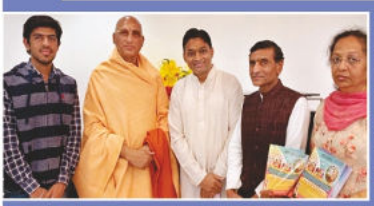

साधकों ने जूनापीठाधीश्वर महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरिजी से भेंटवार्ता की। उन्होंने अपनी कथा में 'ऋषि प्रसाद' का प्रचार करने के लिए कहा।

सूरत में माला-पूजन व ऋषि प्रसाद सम्मेलन

निचली अदालत के निर्णय के बाद आया पूज्य बापूजी का संदेश

तुम 'स्व' में मिल जाना, सच्चिदानंद स्वभाव में जग जाना।

सच्चिदानन्दरूपाय विश्वोत्पत्त्यादिहेतवे ।
तापत्रयविनाशाय श्रीकृष्णाय वयं नुमः ॥

(श्रीमद्भागवत माहात्म्य : १.१)

जो सत् हैं, चैतन्य हैं, आनंदस्वरूप हैं, जिनके अस्तित्व से खुशियाँ दिखती हैं, जड़ शरीरों में चेतना दिख रही है और जो जगत की उत्पत्ति, स्थिति और संहार के हेतु हैं तथा आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक - तीनों तापों का नाश करनेवाले हैं, उन सच्चिदानंद प्रभु को हम प्रणाम करते हैं।

तुम्हारा सच्चिदानंद स्वभाव ऐसा है कि कितना भी न्याय-अन्याय हो, कितनी भी मुसीबतें आयें...

ब्रह्म गिआनी सदा निरलेप ॥
जैसे जल महि कमल अलेप ॥

(गुरुवाणी)

तो उदासी किस बात की ? दुःख किस बात का ? फरियाद किस बात की ? तुम शाश्वत हो, तुम्हारा कभी कोई कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता, तुम वह हो ! तो हमारा कौन क्या बिगाड़ेगा !

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥

'इस आत्मा को शस्त्र काट नहीं सकते, आग जला नहीं सकती, जल गला नहीं सकता और वायु सुखा नहीं सकती।' **(गीता : २.२३)**

ऐसा अपना आपा है ! अपने मुक्त स्वभाव की मस्ती ऐसे प्रसंगों में ही तो जगमगाती है, काहे फिक्र करो ? अपने मुक्त स्वभाव के आगे फिक्र की दाल नहीं गलती इसलिए तुम फिक्र मत करना हं !

आठवें अर्श[१] तेरा नूर चमकदा,
होर[२] भी उच्च हो ।
फकीरा ! आपे अल्लाह हो ।
खुल्लियाँ तैनूँ भऊ न खांदे, लुक लुक कैद न हो ।[३]
छड मौहरा सुन राम दुहाई, अपना आप न को ।[४]
फकीरा ! आपे अल्लाह हो ।

अपने आत्मस्वभाव में खुलो।

पूज्य बापूजी का मंगलमय संदेश

पूरे हैं वे मर्द
जो हर हाल में खुश हैं ।
गर माल दिया यार ने,
तो माल में खुश हैं ।
बेजर[५] जो किया तो,
उसी अहवाल[६] में खुश हैं ॥

खुशी अपना स्वभाव है, शांति अपना स्वभाव है, मुक्तता अपना स्वभाव है, उसको कोई परिस्थिति क्या दबा देगी ? चल री निगुरी ! तेरी दाल नहीं गलेगी। तेरे जैसी निगुरी परिस्थितियाँ तो कई जन्मों में आयीं और गयीं, हम तो वही-के-वही हैं। **हम हैं अपने-आप, हर परिस्थिति के बाप !** क्या खयाल है ? बापू के बच्चे, नहीं रहना कच्चे !

---

१. आकाश २. और ३. मुक्त होने में तुझे कोई राक्षस इत्यादि तो नहीं खाते इसलिए छिप-छिपकर बद्ध मत हो ४. तू संसाररूपी खेल या विषय-भोगरूपी विष को त्याग ऐसी राम की पुकार है और अपने-आपको व्यर्थ नष्ट मत कर, आत्मघात मत कर ५. निर्धन ६. अवस्था

आप भी ऐसा जीवन-लक्ष्य बना लो - पूज्य बापूजी

हनुमानजी का प्राकट्य दिवस चैत्री पूनम है। हनुमानजी के जीवन में कर्म को योग बनाने की जो कला है उसमें से थोड़ी भी कला आपके जीवन में आये तो आपका जीवन निष्कलंक नारायण के अनुभव से सम्पन्न हो जायेगा। हनुमानजी सेवा का महत्त्व जानते हैं। नकली सेवक अधिकार चाहते हैं, वासना बढ़ाते हैं और भोग-विकार में तबाह हो जाते हैं। **असली सेवक अधिकार बिना ही सामनेवाले के तन की तंदुरुस्ती, मन की प्रसन्नता और बुद्धि में बुद्धिदाता का प्रकाश हो इस प्रकार की सेवा करते हैं।**

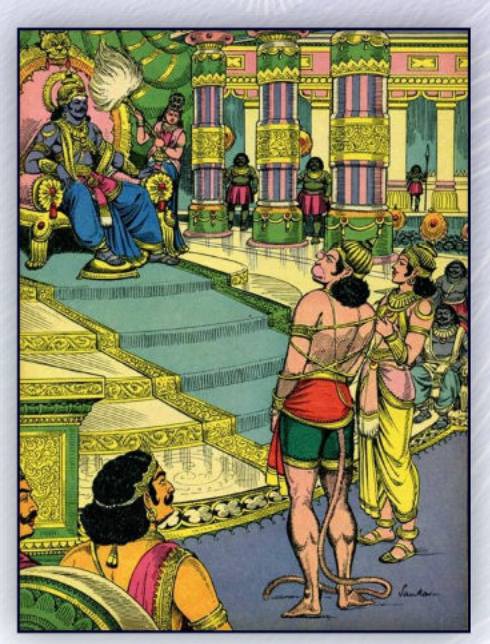

श्री हनुमान जयंती : ६ अप्रैल

अवतरण की निराली गाथा

हनुमानजी की गाथा कुछ निराली है। दशरथजी द्वारा पुत्रकामेष्टि यज्ञ करने के बाद अग्निदेव खीर का कटोरा लेकर प्रकट हुए।

वसिष्ठजी ने कहा : ''राजन् ! धर्मपत्नी तुम्हारी कौसल्याजी हैं, कैकेयी तो तुम्हारी प्रिया है।''

तो खीर का आधा हिस्सा पहले कौसल्याजी को दिया गया। बाकी आधे भाग का कुछ हिस्सा पहले सुमित्रा को और फिर कैकेयी को दिया गया।

कैकेयी यह जानकर रोष में आ गयी और दशरथजी को बोली : ''मेरे को तुमने क्या समझ रखा है ! उनको पहले मिला और मुझे बाद में क्यों ? क्या मैं दासी हूँ ? ...''

इस प्रकार कैकेयी का थोड़ा कुचक्र चला। शिवजी की प्रेरणा से चील आयी और कैकेयी के हाथ से खीर का पात्र उड़ा के अंजन पर्वत पर ले गयी, जहाँ अंजनी देवी दिव्यात्मा पुत्र के लिए तप कर रही थीं। चील ने जाकर उनके हाथ में वह खीर रखी। अंजनी देवी ध्यान में थीं तो उनको पता नहीं चला कि 'यह खीर चील रख गयी है।' उन्होंने माना कि 'मैंने शिवजी की उपासना की तो यह शिवजी ने प्रसाद दिया है।' तो वह प्रसाद खा गयीं। उसीसे गर्भ रह गया और हनुमानजी प्रकट हुए।

उधर कैकेयी का प्रसाद चील ले गयी यह देखकर वह बहुत दुःखी हुई तब दयालु कौसल्याजी ने अपने भाग में से थोड़ी खीर कैकेयी को दी व सुमित्रा ने भी थोड़ी खीर कैकेयी को दी।

राम-काज करने में लज्जा कैसी ?

अशोक वाटिका में हनुमानजी हाथ नहीं आ रहे थे तो मेघनाद ने ब्रह्मास्त्र छोड़ा। हनुमानजी ने ब्रह्मास्त्र का आदर किया, वे पेड़ से नीचे गिर पड़े। मेघनाद ने देखा कि हनुमानजी मूर्च्छित हो गये तब वह उनको नागपाश से बाँधकर ले गया। बँधे-बँधाये हनुमानजी रावण की सभा में खड़े कर दिये गये परंतु हनुमानजी के चेहरे पर न लज्जा है न उच्छृंखलता है। हनुमानजी की निष्फिक्रता, निश्चिंतता और समता देखकर रावण भड़क गया, बोला : ''अरे बंदर ! नागपाश में बाँधकर तुमको यहाँ लाया गया है और ऐसे निश्चिंत खड़े हो मानो यह सभा कोई तुम्हारे

विद्यार्थी संस्कार

प्रतिकूलताओं के सिर पर पैर रख के कदम बढ़ाओ !

- पूज्य बापूजी

कर्मयोगी मस्तक की गुफा में बढ़िया-बढ़िया विचार रखकर सड़ाना पसंद नहीं करेगा । **बड़े विचार, उन्नत विचार तो तब सहायक होते हैं जब वे मस्तक की गुफा से निकलकर कर्मयोग की स्थली पर आयें और नृत्य करते हुए, वाणी बोलते हुए, व्यवहार करते हुए तुम्हारे दिव्य कर्मों के रूप में उनका दर्शन हो जाय ।**

एक लड़के ने अपने गुरुजी के श्रीमुख से सुना था कि काम करते समय कोई भी विघ्न-बाधा आ जाय तो डरना नहीं चाहिए । वह लड़का सातवीं कक्षा में पढ़ता था । उसका नाम था रोहित । उसके पिता छकड़ा चलाने की मजदूरी करते थे ।

पिता का देहांत हो गया । अब घर के लोगों का पालन-पोषण रोहित करता था । वह मेहनत से कतराता नहीं था । उसने अपने विद्यालय में किन्हीं महापुरुष के सत्संग में सुना था कि **'हिम्मत न हार, अपनी शक्ति को जगा, अपने ईश्वर को पुकार ।'**

एक बार वह छकड़े में नमक भर के जा रहा था । रास्ते में जोरों की बारिश पड़ी और वह छकड़ा कीचड़ में धँस गया । बिजली चमकी और मेघ गरजे तो बैल चौंका और भाग गया । मूसलधार वर्षा ने नमक को बहा दिया फिर भी वह सातवीं पढ़ा हुआ लड़का कहता है कि 'ऐ मेघ ! तू किसको डराता है ? ऐ बिजली ! तू किसको चौंकाती है ? मैं बैल नहीं कि भाग जाऊँ, मैं छकड़ा नहीं कि धँस जाऊँ, मैं नमक नहीं कि बह जाऊँ; मैं तो काले मत्थे का इंसान हूँ ! मैं अपने अंतरात्मा की, ॐकार की शक्ति जगाऊँगा और अपने कदम आगे बढ़ाऊँगा ! हरि ओम्म... हरि ओम्म...' हरिनाम के गुंजन से रोहित ने अपनी आत्मिक शक्ति जगायी ।

रास्ते में जोरों की बारिश पड़ी और वह छकड़ा कीचड़ में धँस गया । बिजली चमकी और मेघ गरजे तो बैल चौंका और भाग गया । मूसलधार वर्षा ने नमक को बहा दिया फिर भी...

थोड़ी देर में बरसात बंद हुई और वह छकड़ा लेकर नमकवाले सेठ के पास पहुँचा। सेठ ने कहा : ''तू इतना छोटा बालक होते हुए इतना साहसी और प्रसन्न !'' उसको दुकान पर रख लिया । धीरे-धीरे उसको भागीदार बना लिया। उस सेठ को बेटा नहीं था तो सेठ ने उसको गोद ले लिया । सेठ की गोद में आने से वह मजदूर का बेटा सेठ तो हो गया लेकिन उसमें सेठ होने का घमंड नहीं था ।

आगे चलकर गाँव का मुखिया हुआ, अच्छे काम करने लगा । **'मुखिया हो के लोगों का खून चूस के महल बनाने की अपेक्षा लोगों के आँसू पोंछ के लोगों के हृदय में भी मेरा लोकेश्वर है, उनकी सेवा में प्रभु की प्रसन्नता है' ऐसा समझ के उसने गाँव का अच्छा विकास कर लिया ।** धीरे-धीरे उसकी खबर राजा तक पहुँची तो राजा ने उसे राज्य का मंत्री बना दिया और मंत्री के बाद वह राजा का खास सचिव, प्रधान मंत्री बना । लोगों ने कहा कि ''अरे रोहित ! तू छकड़ा चलानेवाला और आज तू प्रधान मंत्री पद पर है !''

बिनशर्ती समर्पण करता भव से पार - पूज्य बापूजी

संत परम हितकारी होते हैं । वे जो कुछ कहें उसका पालन करने के लिए डट जाना चाहिए । इसीमें हमारा कल्याण निहित है ।

महापुरुषों की बात को टालना नहीं चाहिए ।

श्री योगवासिष्ठ महारामायण में वसिष्ठजी महाराज कहते हैं : ''त्रिभुवन में ऐसा कौन है जो संत की आज्ञा का उल्लंघन करके सुखी रह सके ?''

भगवान शंकर कहते हैं :

गुरुणां सदसद्वापि यदुक्तं तन्न लंघयेत् ।
कुर्वन्नाज्ञां दिवारात्रौ दासवन्निवसेद् गुरौ ॥

'गुरुओं की बात सच्ची हो या झूठी परंतु उसका उल्लंघन कभी नहीं करना चाहिए । रात और दिन गुरु की आज्ञा का पालन करते हुए गुरु के सान्निध्य में दास बनकर रहना चाहिए ।'

गुरुदेव की कही हुई बात चाहे झूठी दिखती हो फिर भी शिष्य को संदेह नहीं करना चाहिए, उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए कूद पड़ना चाहिए ।

सौराष्ट्र (गुज.) में रामू नाम के महान गुरुभक्त शिष्य हो गये । लालजी महाराज के नाम उनके खत आते रहते थे । लालजी महाराज ने रामू के जीवन की एक घटना बतायी थी ।

एक बार रामू के गुरु ने कहा : ''रामू ! जा, घोड़ा-गाड़ी ले आ । भक्त के घर भोजन करने जाना है ।''

रामू घोड़ा-गाड़ी ले आया । गुरु नाराज होकर बोले : ''अभी सुबह के ७ बजे हैं, भोजन तो ११-१२ बजे होगा, बेवकूफ कहीं का ! १२ बजे भोजन करने जाना है और गाड़ी अभी ले आया ! बेचारा ताँगेवाला बैठा रहेगा ।''

रामू गया, ताँगेवाले को छुट्टी देकर आ गया । गुरु ने पूछा : ''क्या किया ?''

हाथ जोड़ के रामू बोला : ''जी, ताँगा वापस कर दिया ।''

''जब जाना ही था तो वापस क्यों किया ? जा, ले आ ।''

रामू गया, ताँगेवाले को बुला लाया ।

''गुरुजी ! ताँगा आ गया ।''

गुरुजी : ''अरे, फिर से ताँगा ले आया ? हमें जाना तो १२ बजे है न ! पहले इतना समझाया लेकिन अभी तक नहीं समझा तो भगवान को क्या समझेगा ?''

ताँगा वापस कर दिया गया । रामू आया तो गुरु गरज उठे : ''वापस कर दिया !... फिर समय पर मिले-न मिले, क्या पता ? जा, ले आ ।''

इस प्रकार ९ बार ताँगा आया और वापस गया । रामू यह नहीं कहता कि 'गुरु महाराज ! आपने ही तो कहा था... !' वह सत्पात्र शिष्य जरा भी चिढ़ता नहीं । गुरुजी तो चिढ़ने का व्यवस्थित संयोग खड़ा कर रहे थे किंतु रामू को गुरुजी के सामने चिढ़ना तो आता ही नहीं था; कुछ भी हो, गुरुजी के आगे वह मुँह बिगाड़ता ही नहीं था ।

१०वीं बार ताँगा स्वीकृत हो गया । तब तक १२ बज गये थे । रामू और गुरुजी भक्त के घर गये । भोजन हुआ । भक्त था कुछ साधन-सम्पन्न । विदाई के समय गुरुजी के चरणों में वस्त्रादि रखे और साथ में रूमाल में १०० रुपये

बापूजी की रिहाई के लिए हिन्दुत्ववादी तत्त्वों को एकजुट होकर प्रयास करना होगा

– श्री अवधेशजी गुप्त, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, गौरक्षा विभाग, वि.हि.प.

जिन्होंने जनमानस को अज्ञान-अंधकार से ज्ञान-प्रकाश की ओर लाने का भगीरथ प्रयास किया, धर्मांतरित हुए वर्ग को पुनः हिन्दू धर्म में लाने का महान कार्य किया, ऐसे सनातन धर्म के पोषक, विस्तारक, प्रचारक, महान धर्मपुरुष **आशारामजी बापू को इस प्रकार अवैध तरीके से निरुद्ध करना यह राष्ट्र और संस्कृति का अपमान है, क्षरण है, महादुर्भाग्य का विषय है ।** जिनके द्वारा यह किया गया है वे निश्चित रूप से दंड के पात्र हैं ।

एक तरफ आये दिन नशे के व्यापारी, हत्यारे, व्यभिचारी पकड़े जाते हैं फिर रातों-रात अदालत को जगा के जमानत लेकर छूट जाते हैं और चैन से अपने घर पर बैठते हैं, वहीं दूसरी तरफ समाज-कल्याण, राष्ट्र-कल्याण और संस्कृति-रक्षा की धर्म-ध्वजा के संवाहक परम पूज्य संत श्री आशारामजी बापू को धूर्ततापूर्वक अवरुद्ध कर रखा है, इसकी मैं कड़े शब्दों में घोर निंदा करता हूँ ।

आरोप दुराचार का लगा परंतु दुराचार आज तक सिद्ध नहीं हुआ, मेडिकल रिपोर्ट और सारे साक्ष्य हैं जिनसे बापूजी की निर्दोषता साबित होती है । सुब्रमण्यम स्वामीजी ने भी इस पर पर्याप्त से ज्यादा प्रकाश डाला है । षड्यंत्रवश वयोवृद्ध बापूजी को कैद कर रखा है । **यह उनको नहीं कैद कर रखा है बल्कि हमारे राष्ट्र की संस्कृति को, राष्ट्र के गौरव को और सारे हिन्दुत्व को कैद कर रखा है । यह समस्त हिन्दुओं के लिए कलंकरूप है ।**

बापूजी राष्ट्रपुरुष, धर्मपुरुष हैं, उन्होंने अपने चिंतन, शोध व संस्कृति के सतत प्रचार के द्वारा भारतवर्ष का इतना कल्याण किया है जिसका वर्णन शब्दों में करना सम्भव नहीं है । उन्होंने अपना सारा जीवन लगाकर समाज को जागृत किया है ।

आप कहते हैं...

सनातन संस्कृति, भारतीय जनता और हिन्दुत्व के कल्याण के लिए पूज्य आशारामजी बापू को तत्काल नतमस्तक होकर रिहा करना कर्तव्य बनता है ।

जब राष्ट्र को जगानेवाले ऐसे संवाहक अवरुद्ध होंगे तो राष्ट्र समुन्नत हो ही नहीं सकता, दुर्दिन झेलने पड़ेंगे । बापूजी को तत्काल रिहा करें, किसीकी आह नहीं लेनी चाहिए । निश्चित रूप से इसका परिणाम महामारी है, समाज व राष्ट्र की पीड़ा है, विश्वयुद्ध है ।

८६ वर्षीय निर्दोष राष्ट्रसंत को नाहक पीड़ा देना तत्काल बंद कर उन्हें बाहर लायें । राजनीतिक पार्टियों को यह नहीं दिखता कि महापुरुष अंदर हैं ? उनको रिहा कराना पार्टियों का कर्तव्य है । सभीको अपना कर्तव्य समझकर, अपने आग्रह-दुराग्रह व अहंकार को एक तरफ हटा के बापूजी को क्षमा-याचनासहित आदरपूर्वक बाहर लाना चाहिए तभी उन पर हुए अन्याय का प्रायश्चित हो सकता है ।

रिहाई के लिए सतत प्रयास हो !

अगर संत एकजुट होकर इस अन्याय के विरुद्ध अपना बिगुल नहीं फूँकेंगे तो स्वयं भी प्रताड़ित होंगे । सारे संतों को एकजुट होकर इस पर प्रयास करना चाहिए । ❐

विजातीय द्रव्यों को करें दूर, पायें स्वास्थ्य-लाभ भरपूर !

- पूज्य बापूजी

पेट साफ करने का अक्सीर इलाज यह है कि रात्रि को सोने से पहले त्रिफला टेबलेट हलके गुनगुने पानी से लें, नहीं तो ऐसे ही चूस लें - जिसको जितनी, जैसे अनुकूल पड़ें । मस्से (बवासीर) हों, पेट साफ नहीं हो रहा हो तो रात को २ टेबलेट ले लीं और फिर सुबह २ ले लीं। आधे-पौने घंटे में तो वे पेट की सफाई करके तुम्हारे मस्से के जो भी दोष हैं उन्हें कुछ ही दिन में साफ कर देंगी । किंतु केवल मस्से मिटाने के लिए त्रिफला नहीं है, यह तो हमारे शरीर के समस्त हानिकारक द्रव्यों को ढूँढ़ के निकाल देता है ।

एक मंत्री आता था मेरे पास। उसने एक बार मेरे से पूछा : ''मैं आपको कितने साल का लगता हूँ ?''

मैंने ४० से ५० के बीच का अनुमान लगाया।

वह बोला : ''नहीं, मैं ६५ साल का हूँ लेकिन लगता हूँ न ४०-५० का !''

मैंने कहा : ''इसका क्या कारण है ?''

बोला : ''मैं रोज त्रिफला लेता हूँ ।''

तो त्रिफला का उसको बड़ा अनुभव था। मेरे को भी बड़ा अनुभव है। मेरे को मस्से हो गये थे तो त्रिफला लिया तो सब गायब हो गये। अब भी मस्से-वस्से जैसा कुछ उभरता है तो त्रिफला ले लेता हूँ तो दूसरे दिन सब गायब ! तो ऋषि प्रसाद वालों को यह कुंजी मिल गयी। किसीको मस्से हों तो बस, त्रिफला दे दो और यह प्रयोग बता दो, वह ठीक हो जायेगा।

त्रिफला से पेट की समस्त तकलीफें दूर हो जाती हैं । आलू-वालू खाने से आगे चल के जो भयंकर ट्यूमर, हार्ट अटैक, ब्रेन ट्यूमर होनेवाला होता है वह भी हमारे सम्पर्कवालों को नहीं होगा क्योंकि मैंने उन्हें त्रिफला की कुंजी दे दी है ।

मैंने भी तो आलू खाये हुए थे लेकिन मैंने आलू के दुष्प्रभाव को दूर करने के लिए, अंग्रेजी दवाइयों के साइड इफेक्ट्स को भगाने के लिए त्रिफला रसायन के ४० दिन के २ कल्प किये थे। अच्छा हुआ साइड इफेक्ट हुआ एलोपैथी से; उसे दूर करने के लिए मैंने त्रिफला रसायन का प्रयोग किया तो उससे मेरा सारा शरीर एकदम धुल गया, शुद्ध हो गया।

(त्रिफला चूर्ण, त्रिफला रसायन (सादा व स्पेशल), त्रिफला टेबलेट - ये संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकते हैं।) ❐

केवल निष्ठा अटल होनी चाहिए

- संत बहिणाबाई

संतसमागमें राहे... ...सिद्धि दासी कामाच्या ॥

जो सत्संग आदि द्वारा संतों का समागम करते रहते हैं उन्हें किस बात की कमी होगी ? केवल मन में निष्ठा का बल अटल होना चाहिए बस ! संत केवल विज्ञान यानी स्वयं के अनुभवसम्पन्न ज्ञान की तरफ इशारा करते हैं। इन संतों के पास सिद्धियाँ दासी होकर रहती हैं।

शाहाबी खजूर

पोषक तत्त्वों से भरपूर, सेहत का खजाना

ये वात-पित्तशामक एवं १४० प्रकार की बीमारियों को जड़ से उखाड़नेवाले हैं । शर्करा, प्रोटीन्स, कैल्शियम, पोटैशियम, लौह, मैग्नेशियम, फॉस्फोरस, रेशों (fibres) आदि से भरपूर हैं । तुरंत शक्ति-स्फूर्ति देनेवाले ये खजूर रक्त-मांस, वीर्य व कांति वर्धक होने के साथ-साथ कब्जनाशक तथा हृदय व मस्तिष्क के लिए बलप्रद हैं । इनका सेवन बारहों महीने कर सकते हैं ।

₹ १५०
१ किलो

आँवला रस

दीर्घायु व यौवन प्रदाता, विविध रोगों में लाभदायी

यह वीर्यवर्धक, त्रिदोषशामक व गर्मीशामक है । इसके सेवन से आँखों व पेशाब की जलन, अम्लपित्त (hyperacidity), श्वेतप्रदर, रक्तप्रदर, बवासीर आदि पित्तजन्य अनेक विकारों में लाभ होता है ।

₹ ७५
wt. ७१० ग्राम
७०० मि.ली.

पुदीना अर्क

पाचनशक्तिवर्धक, पेट के विकारों में विशेष उपयोगी

यह पाचक, रुचिकारक, भूखवर्धक, स्फूर्तिदायक व चित्त को प्रसन्न करनेवाला है । पेट के विकारों, जैसे अरुचि, भूख न लगना, अजीर्ण, अफरा, उलटी, दस्त, हैजा एवं कृमि में यह विशेष उपयोगी है । बुखार, खाँसी, सर्दी-जुकाम, मूत्राल्पता तथा श्वास व त्वचा-रोगों में भी लाभदायी है ।

₹ ७०
५०० मि.ली.

कफ सिरप

श्वसन-तंत्र की समस्याओं में लाभदायी

यह सभी प्रकार के श्वासनली के विकारों, सर्दी, खाँसी, दमा तथा सूखी खाँसी में लाभकारी है । बच्चों व बड़ों सभीके लिए उपयोगी है ।

₹ ४०
१०० मि.ली.

गुलाब महक (गुलाबजल)

गर्मी-संबंधी तकलीफों में उपयोगी

* शीतलताप्रदायक, प्राकृतिक सौंदर्यप्रद व शरीर के रंग को निखारनेवाला ।
* मुँहासों, त्वचा के लाल चकत्तों, आँखों के नीचे के काले घेरों तथा गर्मी के कारण होनेवाली फुंसियों को दूर करने में सहायक ।

₹ २५
१०० मि.ली.

ग्लिसरीन साबुन

नीम व तुलसी अर्क युक्त

ग्लिसरीन साबुन त्वचा को सुंदर व कोमल बनाता है । यह कील-मुँहासे व दाग-धब्बों में भी उपयोगी है । तुलसी व नीम कीटाणुनाशक तथा त्वचा के रोगों में लाभदायक हैं ।

₹ ३०
१०० ग्राम

आँवला-पुदीना चटनी

रुचिकर, भूखवर्धक एवं भोजन पचाने में सहायक

यह स्वादिष्ट, भूखवर्धक व भोजन पचाने में सहायक है । इसके सेवन से शरीर की कार्य-प्रणाली सुधरकर वह पुष्ट व बलवान होता है । साथ ही यह कब्ज, अफरा, अजीर्ण, अम्लपित्त (hyperacidity) आदि पाचन-संबंधी समस्याओं में भी लाभदायी है ।

₹ ६०
५०० ग्राम

शीतलता-प्रदायक, स्वास्थ्यवर्धक, गुणकारी शरबत

गुलाब शरबत : सुमधुर, जायकेदार, शारीरिक व मानसिक थकावट को मिटानेवाला ।

पलाश शरबत : जलन, प्यास आदि में लाभदायक, गर्मी सहने की शक्ति बढ़ानेवाला ।

ब्राह्मी शरबत : स्मरणशक्तिवर्धक, दिमाग को शांत व ठंडा रखने में सहायक । wt. = Net weight

₹ ९५ wt. ९४५ ग्राम ७०० मि.ली.
₹ ९५ wt. ९४५ ग्राम ७०० मि.ली.
₹ ९५ wt. ९४५ ग्राम ७०० मि.ली.

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है । अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७६९. ई-मेल : contact@ashramestore.com

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2021-23
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2023)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/21-23
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2023)
Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month.
Date of Publication: 1st March 2023

होली के पावन पर्व पर सूरत आश्रम में ध्यान योग साधना शिविर

एवं पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के पावन करकमलों से स्पर्शित गंगाजल मिश्रित पलाश के रंग से सामूहिक होली

४ मार्च (शाम) से ८ मार्च

पूज्यश्री से स्पर्शित रंग से होली : ८ मार्च

स्थान : संत श्री आशारामजी आश्रम, आश्रम रोड, जहाँगीरपुरा, सूरत । सम्पर्क : (०२६१) ३५१४१३८, ९२२७४५५५१३/१४

चेटीचंड पर अहमदाबाद आश्रम में ध्यान योग साधना शिविर

२२ से २६ मार्च

सम्पर्क : (०७९) ६१२१०८८८

विशेष : रामनवमी (३० मार्च) को बड़ा दुर्लभ योग है । इसमें ध्यान, जप, उपवास का करोड़ों सूर्यग्रहण से अधिक फल होता है (पढ़ें पृष्ठ १६) । शिविर के बाद ४ दिन रुककर इस योग का लाभ भी पूज्यश्री की तपःस्थली में रह के ले सकते हैं । २२ से ३० मार्च तक नवरात्रि का अनुष्ठान भी कर सकते हैं ।

देश-विदेश में मनाया गया मातृ-पितृ पूजन दिवस बही पावन प्रेम की रसधार, भावविभोर हुए करोड़ों हृदय

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं । अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें ।

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक** : धर्मेश जगराम सिंह चौहान **मुद्रक** : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : श्रीनिवास र. कुलकर्णी